अलंकार

अलंकार का काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। जैसे रहन-सहन खान-पान, वेषभूषा,आदि में सुंदरता सब को प्रिय है वैसे ही उक्ति को भी सुंदर कर्णप्रिय तथा अर्थसौष्ठव से युक्त शब्दों में सुंदर ढंग से कहना - सुनना सब को प्रिय है। यदि कोई सहज सुंदर वस्तु सजा दी जाय तो उसमें पहले से अधिक आकर्षण आ जाता है। इसीलिए तो शरीर को गहनों या अलंकारों से सजाया जाता है। अतः आचर्या मम्मट ने यहीं बात यों कहीं है।-- " जैसे हार आदि आभूषण कंठ आदि अंगों कि सुंदरता बढाते है वैसे ही अनुप्रास, उपमा आदि अलंकार शब्द और अर्थ के सौंदर्य कि वृद्धि करते है। "अलंकरोति इति अलंकारः" जो अलंकृत करता - है, वही अलंकार है। अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है - अलम + कार, यहाँ पर अलम का अर्थ होता है' आभूषण। मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है उसकी प्रवृत्ति ने ही नए अलंकारों को जन्म दिया गया है। अलंकार, कविता-कामिनी के सौन्दर्य को बढ़ाने वाले तत्व होते हैं।
।

अलंकारों के निम्न भेद है :-

1 शब्दालंकार
2 अर्थालंकार
3] उभयालंकार

शब्दालंकार मे शब्द संबंधी चमत्कार से युक्त विधान रहता है और अर्थालंकार अर्थ संबंधी विशेषता रहती है । अलंकारो मे एक अन्य अलंकार का भेद भी जाना जाता है--उभयालंकार । उभयालंकार उसे कहते है जहाँ एक साथ शब्द और अर्थ दोनों कि विशेषता होती है।

यमक अलंकार

जिस काव्य में समान शब्द के अलग-अलग अर्थों में आवृत्ति हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। यानी जहाँ एक ही शब्द जितनी बार आए उतने ही अलग-अलग अर्थ दे।
जैसे --

"कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
या खाए बौरात नर या पाए बौराय ।।"

अनुप्रास अलंकार

अनुप्रास अलंकार में किसी एक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति होती है। आवृत्ति का अर्थ है दोहराना ।
जैसे --

1] "तरनी तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।"

ऊपर दिए गए उदाहरण में 'त' वर्ण की 5 बार आवृत्ति हो रही है, एवं हम जानते हैं की जब किसी वाक्य में किसी वर्ण या व्यंजन की एक से अधिक बार आवृत्ति होती है तब वहां अनुप्रास अलंकार होता है। अतएव यह उदाहरण अनुप्रास अलंकार के अंतर्गत आएगा।

2] "चारु चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही थी जल-थल में।"

ऊपर दिए गए वाक्य में 'च' वर्ण की आवृत्ति हो रही है और इससे वाक्य सुनने में और सुन्दर लग रहा है।

श्लेष अलंकार

श्लेष शब्द श्लिष धातु से बना है। श्लेष का अर्थ होता है चिपका हुआ या मिला हुआ। जब एक ही शब्द से हमें विभिन्न अर्थ मिलते हों तो उस समय श्लेष अलंकार होता है। अर्थात जब किसी शब्द का प्रयोग एक बार ही किया जाता है लेकिन उससे अर्थ कई निकलते हैं तो वह श्लेष अलंकार कहलाता है। जैसे:
उदाहरण

1] " रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।"

इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है : 1. पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होनी चाहिए। 2. पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है. रहीम कहते हैं कि चमक के बिना मोती का कोई मूल्य नहीं । 3. पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है।

2] " विपुल धन, अनेकों रत्न, हो साथ लाए
प्रियतम! बतला दो लाल मेरा कहाँ है? "
यहाँ लाल शब्द के दो अर्थ है-- लाल = १) लाल मणि [माणिक] २) पुत्र कृष्ण

वक्रोक्ति अलंकार

'वक्रोक्ति' का अर्थ है 'वक्र उक्ति' अर्थात 'टेढ़ी उक्ति' या टेढ़ा कथन कहनेवाले का अर्थ कुछ होता है, किन्तु सुननेवाला उससे कुछ दूसरा ही अभिप्राय निकाल लेता है। जिस शब्द से कहने वाले व्यक्ति के कथन का अभिप्रेत अर्थ ग्रहण न कर श्रोता अन्य ही कल्पित या चमत्कारपूर्ण अर्थ लगाये और उसका उत्तर दे, उसे वक्रोक्ति कहते हैं। जहाँ किसी के कथन का कोई दूसरा पुरुष श्लेष या काकु (उच्चारण के ढंग) से दूसरा अर्थ करे, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

"एक कबूतर देख हाथ में पूछा, कहाँ अपर है ?
उसने कहा, अपर कैसा ? वह तो उड़ गया सपर है।।"

नूरजहाँ से जहाँगीर ने पूछा कि 'अपर' अर्थात दूसरा कबूतर कहाँ है ? नूरजहाँ ने 'अपर' का अर्थ लगाया- 'पर (पंख) से हीन' और उत्तर दिया कि वह पर-हीन नहीं था, बल्कि परवाला था, इसलिए तो उड़ गया। यहाँ वक्ता के अभिप्राय से बिल्कुल भिन्न अभिप्राय श्रोता के उत्तर में है।

वीप्सा अलंकार

आदर, घबराहट, आश्चर्य, घृणा, रोचकता आदि प्रदर्शित करने के लिए किसी शब्द को दुहराना ही वीप्सा अलंकार है। जब किसी कथन में अत्यन्त आदर के साथ एक शब्द की अनेक बार आवृत्ति होती है तो वहाँ वीप्सा अलंकार होता है।
जैसे--

1] “हा! हा!! इन्हें रोकन को टोक न लगावो तुम।”
यहाँ 'हा!' की पुनरुक्ति द्वारा गोपियों का विरह जनित आवेग व्यक्त होने से वीप्सा अलंकार है।

2] "शिव! शिव! शिव! कहते हो यह क्या?
ऐसा फिर मत कहना।
राम! राम! यह बात भूलकर,
मित्र कभी मत गहना.."

अन्योक्ति अलंकार

जहाँ पर किसी उक्ति के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाए वहाँ पर अन्योक्ति अलंकार होता है।
जैसे --
“फूलों के आस-पास रहते हैं,
फिर भी काँटे उदास रहते हैं।”

विरोधाभास अलंकार

जब किसी वस्तु का वर्णन करने पर विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहाँ पर विरोधाभास अलंकार होता है। जैसे--
" आग हूँ जिससे दुलकते बिंदु हिमजल के।
शून्य हूँ जिसमें बिछे हैं पांवड़े पलकें । "

विभावना अलंकार

जहाँ पर कारण के न होते हुए भी कार्य का हुआ जाना पाया जाए वहाँ पर विभावना अलंकार होता है। जैसे --

1] "बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।

2] "आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।"

अपहृति अलंकार

अपहृति का अर्थ होता है छिपाव। जब किसी सत्य बात या वस्तु को छिपाकर उसके स्थान पर किसी झूठी वस्तु की स्थापना की जाती है वहाँ अपहृति अलंकार होता है। यह अलंकार उभ्यालंकार का भी एक अंग है। जैसे --

"सुनहु नाथ रघुवीर कृपाला, बन्धु न होय मोर यह काला ।"

व्यतिरेक अलंकार

व्यतिरेक का शाब्दिक अर्थ होता है आधिक्य व्यतिरेक में कारण का होना जरुरी है। अत: जहाँ उपमान की अपेक्षा अधिक गुण होने के कारण उपमेय का उत्कर्ष हो वहाँ पर व्यतिरेक अलंकार होता है। जैसे

होता है। जैसे ---

"का सरवरि तेहिं देउं मयंकू । चांद कलंकी वह निकलंकू ।।
मुख की समानता चन्द्रमा से कैसे दूँ ?"

भ्रांतिमान अलंकार

जब उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाये वहाँ पर भ्रांतिमान अलंकार होता है अथार्त जहाँ उपमान और उपमेय दोनों को एक साथ देखने पर उपमान का निश्चयात्मक भ्रम हो जाये मतलब जहाँ एक वस्तु को देखने पर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी अंग माना जाता है। जैसे --

"पायें महावर देन को नाईन बैठी आय ।
फिरि-फिरि जानि महावरी, एडी भीड़त जाये।"

दीपक अलंकार

जहाँ पर प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म स्थापित किया जाता है वहाँ पर दीपक अलंकार होता है। जैसे

"चंचल निशि उदवस रहें, करत प्रात वसिराज।
अरविंदन में इंदिरा, सुन्दरि नैनन लाज "

प्रतीप अलंकार

इसका अर्थ होता है उल्टा । उपमा के अंगों में उल्ट फेर करने से अथार्त उपमेय को उपमान के समान न कहकर उलट कर उपमान को ही उपमेय कहा जाता है वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। इस अलंकार में दो वाक्य होते हैं एक उपमेय वाक्य और एक उपमान वाक्य। लेकिन इन दोनों वाक्यों में सदृश्य का साफ कथन नहीं होता, वः व्यंजित रहता है। इन दोनों में साधारण धर्म एक ही होता है परन्तु उसे अलग-अलग ढंग से कहा जाता है। जैसे --

"नेत्र के समान कमल है।"

अतिश्योक्ति अलंकार

जब किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन करने में लोक समाज की सीमा या मर्यादा टूट जाये उसे अतिश्योक्ति अलंकार कहते हैं। जैसे--

" हनुमान की पूंछ में लगन न पायी आगि।
सगरी लंका जल गई, गये निसाचर भागि।"

दृष्टान्त अलंकार

जहाँ दो सामान्य या दोनों विशेष वाक्यों में बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव होता हो वहाँ पर दृष्टान्त अलंकार होता है। इस अलंकार में उपमेय रूप में कहीं गई बात से मिलती-जुलती बात उपमान रूप में दुसरे वाक्य में होती है। यह अलंकार उभ्यालंकार का भी एक अंग है। जैसे

एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रह सकती हैं।
किसी और पर प्रेम नारियाँ, पति का क्या सह सकती है।

संदेह अलंकार

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं। जब यह दुविधा बनती है, तब संदेह अलंकार होता है अथार्त जहाँ पर किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे वहाँ संदेह अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है। जैसे

" यह काया है या शेष उसी की छाया,
क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया ।"

उपमा अलंकार

काव्य में जहां भिन्न-भिन्न वस्तुओं में रूप रंग या गुण के कारण समानता प्रदर्शित की जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा शब्द का अर्थ होता है - तुलना । जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे यक्ति या वस्तु से की जाए वहाँ पर उपमा अलंकार होता है। जैसे--

"सागर-सा गंभीर ह्रदय हो,
गिरी -सा ऊँचा हो जिसका मन ।

उपमा अलंकार के अंग

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं - उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और साधारण धर्म

उपमेय: उपमेय का अर्थ होता है - उपमा देने के योग्य | अगर जिस वस्तु की समानता किसी दूसरी वस्तु से की जाये वहाँ पर उपमेय होता है।
उपमान: उपमेय की उपमा जिससे दी जाती है उसे उपमान कहते हैं। अथार्त उपमेय की जिस के साथ समानता बताई जाती है उसे उपमान कहते हैं।
वाचक शब्द: जब उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाती है तब जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे वाचक शब्द कहते हैं।
साधारण धर्म: दो वस्तुओं के बीच समानता दिखाने के लिए जब किसी ऐसे गुण या धर्म की मदद ली जाती है जो दोनों में वर्तमान स्थिति में हो उसी गुण या धर्म को साधारण धर्म कहते हैं।

उदा. मुख चाँद से सुंदर है। इस उदाहरण में मुख उपमेय है क्यों कि इसकी तुलना कि जा रही है। चाँद उपमान है क्यों कि इससे मुख कि तुलना कि जा रही है। सुंदर विशेषण ही गुण रूप धर्म है। इसी सुंदरता के आधारपर दोनों में संबंध स्थापित किया जाता है। सा वाचक पद है जिसके द्वारा उपर्युक्त सादृश्य कि सूचना मिल रही है।

उत्प्रेक्षा अलंकार

काव्य में जहाँ उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए। अथार्त जहाँ पर अप्रस्तुत को प्रस्तुत मान लिया जाए वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस अलंकार में वाचक शब्द निम्ना नुसार होते है।
"मानो मवों मनु, मनहु,
जानौ जनौ जनु, जनहु। "
उदा. मुख चंद्रमा के समान है। --- (उपमा)
मुख मानो चंद्रमा है। -- (उत्प्रेक्षा)

रूपक अलंकार

जहाँ पर उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे वहाँ रूपक अलंकार होता है अथार्त जहाँ पर उपमेय और उपमान के बीच के भेद को समाप्त करके उसे एक कर दिया जाता है वहाँ पर रूपक अलंकार होता है। दूसरे शब्दों में जब गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय को ही उपमान बता दिया जाए यानी उपमेय ओर उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे तब वह रूपक अलंकार कहलाता है।
उदाहरण

1] "पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।"

प्रस्तुत उदाहरण में राम रतन को ही धन बता दिया गया है। राम रतन' - उपमेय पर 'धन' - उपमान का आरोप है एवं दोनों में अभिन्नता है।
2] मुख ही चंद्रमा है।
3] राम के नेत्र ही कमल है।